पांच में से एक रीढ़धारी खतरे में है

जापान में दुनिया भर की सरकारें लुप्त होते पेड़-पौधों और जंतुओं को बचाने की योजनाएं बनाने में लगी हैं। दूसरी ओर, जीव वैज्ञानिकों ने जैव विविधता की स्थिति पर जो ताज़ा आंकड़े पेश किए हैं वे दुखदायक हैं।

अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) प्रजातियों की स्थिति पर सतत नज़र रखता है। आईयूसीएन ने हाल में अपनी रेड लिस्ट में कई नए पेड़-पौधों और जंतुओं को शामिल किया है। रेड लिस्ट जोखिमग्रस्त प्रजातियों की सूची है। इसके साथ ही लंदन की प्राणि विज्ञान समिति (ज़ेडएसएल) ने एक रिपोर्ट जारी की है - इवॉल्यूशन लॉस्ट। इस रिपोर्ट में रेड लिस्ट की जानकारी और अन्य स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों को शामिल किया गया है। रिपोर्ट में ईल से लेकर हाथी तक विभिन्न रीढ़धारी प्राणियों का एक व्यापक चित्र प्रस्तुत हुआ है।

कुल मिलाकर 19 प्रतिशत रीढ़धारी प्रजातियां खतरे में हैं। इनमें से कुछ तो विलुप्ति की कगार पर हैं। जैसे एक कैटफिश है जो नमीबिया के एक छोटे-से कुंड में सीमित है। यह कुंड मात्र 18 मीटर लंबा और 2.5 मीटर चौड़ा है। यदि यह कुंड सूख गया तो साथ में यह कैटफिश भी समाप्त हो जाएगी।

वैसे अकशेरुकी (यानी रीढ़-रहित) जंतुओं की हालत भी पतली है मगर उनके बारे में स्पष्ट जानकारी का अभाव है। ज़ेडएसएल का अनुमान है कि 15 प्रतिशत अकशेरुकी प्रजातियां भी गंभीर खतरे में हैं।

वनस्पतियों के संदर्भ में पहली बार आईयूसीएन ने समुद्री घासों को अपने अध्ययन में शामिल किया है। आईयूसीएन के कार्यक्रम अधिकारी हीथर हार्वेल के मुताबिक 14 प्रतिशत समुद्री घासें अस्तित्व का संकट झेल रही हैं।

वैसे रिपोर्ट के मुताबिक सब कुछ दुखद ही नहीं है। एंजलफिश और बटरफ्लाई फिश की अधिकांश प्रजातियां बढ़िया हालत में हैं। इसी प्रकार से मार्बल्ड लंग फिश (यानी फेफड़े वाली मछली) भी चिंता से मुक्त है। यह मछली जैव विकास के अतीत का एक जीता-जागता उदाहरण है और किसी भी जंतु की अपेक्षा बड़े जीनोम की मालिक है।

बहरहाल, रिपोर्ट्स की मूल भावना यह है कि प्राकृतिक विश्व सौंदर्य और विविधता का खज़ाना है। कहीं ऐसा न हो कि हम इसे ठीक से जान भी न पाएं, और यह उससे पहले ही गुम हो जाए। ***(स्रोत फीचर्स)***